

तन्त्र ग्रन्थमाला नं० २३

कुब्जिकातन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक
प्रदीप कुमार राय



प्राच्य प्रकाशन, वाट्याणशी

सूचीपत्र

प्रथम पटल :

१ - १३

शाश्वत चरम सारतत्त्व बृहद्योनि (परमा शक्ति) का विवरण; काली, तारा प्रभृति दश महाविद्या के महामन्त्र का कथन; पितृगण कौन हैं—उनका विवरण; कलिकाल में आगमोक्त विधान से मोक्षदा कालिका देवी शीघ्र फल-प्रदा हैं; श्री गुरु के मुख से पापनाशिनी महाविद्या के मन्त्रादि का ग्रहण कर्त्तव्य है; प्रकृति के बिना ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर कोई भी कार्य करने में अक्षम हैं; कृष्ण एवं कृष्णा (काली) में अभिन्नता का वर्णन एवं दश महाविद्या के नामों के गूढ़ार्थ का कथन।

द्वितीय पटल :

१४ - २२

मन्त्रार्थ कथन—क्रीं, हुं, हं, क्रूं, ह्रीं, दूं—प्रभृति बीज-मन्त्रों का अर्थविश्लेषण; महामाया के एकाक्षरी, अष्टादशाक्षरी, एकविंशत्यक्षरी प्रभृति मन्त्रादि के प्रत्येक अक्षर का विशद व्याख्यान; निर्गुण एवं सगुण-द्विविध मन्त्र के फल का कथन।

तृतीय पटल :

२३ - ३५

भुवनेश्वरी, भैरवी, त्रिपुरा, कामाख्या, अन्नपूर्णा, दुर्गा प्रभृति महाशक्ति के बीजमन्त्रादि के अर्थ का विश्लेषण।

चतुर्थ पटल :

३६ - ३९

छिन्नमस्ता के परम गोपनीय बीजमन्त्रादि; बगलामुखी के मन्त्रादि एवं स्तम्भन, मारण, उच्चाटन प्रभृति कार्यों का निर्देश; मातङ्गीदेवी के मन्त्रादि का कथन।

पञ्चम पटल :

४० - ४२

मन्त्रचैतन्य-कथन—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्षप्रदाय मन्त्र-चैतन्य की पद्धति का निरूपण; नादबिन्दुयुक्त वर्णमयी शक्ति षट्चक्र को भेद कर सनातन

चित्शक्तिरूप में प्रकाशित होते हैं—यह चैतन्य या चित्शक्ति ही योगियों की योगसाधना का विषय है; कुलकुण्डलिनी के ध्यान से ही उत्तम मन्त्र-चैतन्य का लाभ; जो सहस्रार में चित्शक्तिरूप में अवस्थिता हैं, वही मन्त्रचैतन्य स्वरूपा एवं आनन्द-दायिनी हैं; उनके ध्यानादि प्रक्रिया का वर्णन।

षष्ठ पटल :

४३ - ५३

योनिमुद्राकथन—मूलाधार से कुलकुण्डलिनी शक्ति का क्रमान्वय से स्वाधिष्ठान, मणिपूर इत्यादि चक्रों को क्रमशः भेद कर सहस्रार में आनयनकार्य को ही तन्त्र में 'योनिमुद्रा' कहा गया है; उनके ध्यानादि एवं विविध प्रकार से प्रकाशन का विवरण।

सप्तम पटल :

५४ - ६४

दिव्य, वीर एवं पशुभाव का कथन, सिद्ध पीठस्थानादि का विवरण, किन देवी की पूजा में कौन-कौन से पुष्प प्रशस्त हैं, उसका विवरण; कुलवृक्ष, कुलस्त्री एवं कुलगृह के प्रति सम्मान-प्रदर्शन एवं कुमारी-पूजादि का निर्देश।

अष्टम पटल :

६५ - ७२

मारण, उच्चाटन, मोहन एवं काम्यसिद्धि के विषय में वर्णन; किस तिथि में, किस स्थान में, किस मन्त्र से जपादि कार्यों को करने पर अभीष्ट-सिद्धि होती है, उसका विस्तृत विवरण; वीरभाव से साधन का कथन; काली की पूजा एवं होमादि का निर्देश।

नवम पटल :

७३ - ८१

मन्त्रसिद्धि का लक्षण; मन्त्रसिद्धि के उपाय एवं पञ्चाङ्ग-पुरश्चरण-विधि का विविध विवरण।

